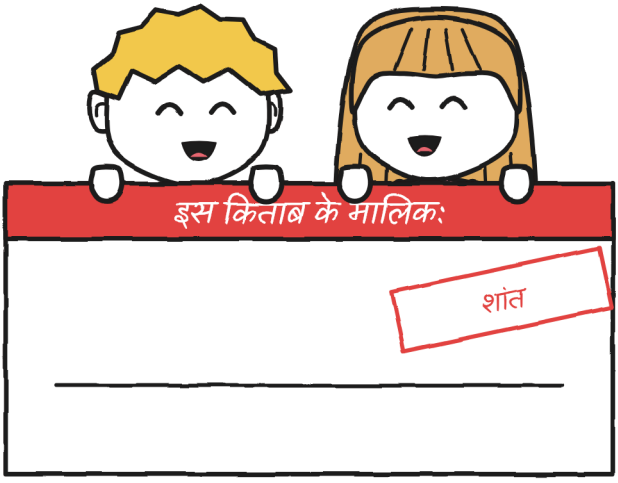


शांत। जब तक तुम इसे खोल न लो। –ज.

अगर यह तुम्हें मिले, तो लौटा देना। बिना किसी सरप्राइज़ के: सीधे इसके मालिक को।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उस चीज़ पर लगती है जो सिर्फ़ कहानी में होती है: असली ड्रैगन नहीं होते और पार्सल उड़कर वापस नहीं आते। असली पार्टी के लिए आख़िरी पन्ना देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 5

एक केक, हम दो

LinguAula



(गुनी की डायरी)

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 5
एक केक, हम दो

सीरीज़ की पाँचवीं किताब। पिछली किताबें: “यह पार्सल काटता है”, “बादल गरजने से पहले न खोलें”, “वापस आया, प्लीज़” और “यहाँ नहीं, चूरा!”।

लेखन और चित्र: LinguAula

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

© 2026 LinguAula · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

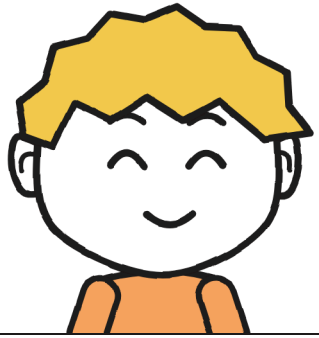
फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।



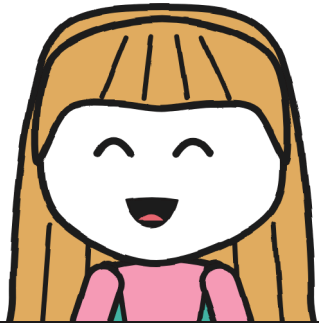
हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी केक को चोट नहीं पहुँची। हाँ, दो हिस्सों में बँटा ज़रूर। —ज.

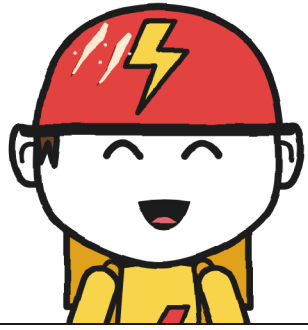
कौन कौन है



गुनी। शनिवार का डिलीवरी बॉय। यह डायरी उसी की है। उसे शांत शामें पसंद हैं।



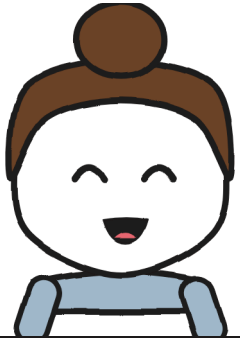
जूलिता। हरे रंग से लिखती है और "ज." से दस्तख़त करती है। उसे म्यूज़िक वाली पार्टियाँ पसंद हैं। और सरप्राइज़ भी।



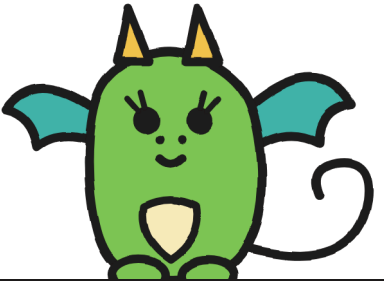
टोन्यो। "बिजली" के लिए डिलीवरी करता है, दस मिनट में या मुफ़्त। जो नहीं पहुँचाता, वे हैं धोखे।



माशा। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन। जादूगरनी वाली टोपी पहनती हैं। जितना बताती हैं, उससे ज़्यादा जानती हैं।



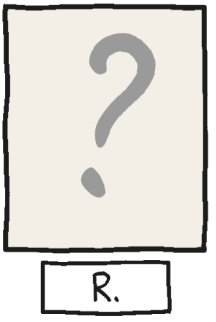
एलिया। मोहल्ले की बेकरी वाली। उनके पास एक ओवन है और दो हाथ।



चूरा। ड्रैगन की बच्ची। वेरा के साथ रहती है। उसे मोमबत्तियाँ पसंद हैं। ज़रूरत से ज़्यादा।



पार्सल नं. 5। बाहर से सब जैसा। लेबल पर लिखा है: जहाँ समा जाए, वहाँ लगाएँ।



वे पार्सल R. के भेजे हुए हैं, जिन्हें कोई पहुँचा नहीं पाता। R. का नाम कोई नहीं लेता।



अध्याय 1

दो न्योते

डायरी नंबर 4 एक सोए हुए जूते पर ख़त्म हुई थी, और किसी डायरी के लिए इससे अच्छा अंत मुझे नहीं सूझता। नंबर 5 गुलाबी है। स्ट्रॉबेरी जैसा गुलाबी, केक की आइसिंग वाला, और एक कोने में दुकान की मुहर। मारा उसे शनिवार की सुबह काउंटर पर रख गईं, बिना कुछ कहे, और स्याही की शीशियाँ सीधी करने लगीं, इतने ध्यान से जितने की उन्हें ज़रूरत नहीं थी। उनका नज़र न मिलाने का यही तरीक़ा है।

पहले पन्ने के लिए मैं पूरे हफ़्ते शब्द आज़माता रहा था। नंबर 2 पर मैंने लिखा था ऑफ़िशियल; नंबर 3 पर, सीक्रेट; नंबर 4 पर, फ़ाइनल। लगता है ताले वाले शब्दों के लिए मेरे मन में कमज़ोरी है। इस बार ढूँढना नहीं पड़ा: वह अपने आप आ गया, जैसे वह चीज़ आती है जिसे आप कई दिनों से चाहते रहे हों और आपको पता ही न चला हो।

ऊपर मैंने लिखा डिलीवरी डायरी 5 · गुनी की, जो कि लिखा जाता है। उसके नीचे, धीरे-धीरे, ताज़ा छीली हुई पेंसिल से, सिर्फ़ एक शब्द:

शांत।

कोई विस्मयादिबोधक चिह्न नहीं। शांत विस्मयादिबोधक तो अपने आप में एक विरोधाभास होता, और विरोधाभासों से मैं सावधानी से पेश आता हूँ।

जूलिता काउंटर के दूसरी तरफ़ झुकी हुई थी, सिर एक ओर टेढ़ा किए, उस तोते की तरह जो रेडियो सुन रहा हो। उसने मुझसे डायरी नहीं माँगी। ज़रूरत ही नहीं थी: वह उलटा उतनी ही तेज़ी से पढ़ लेती है जितनी तेज़ी से सीधा, और कहीं ज़्यादा बेशर्मी से।

“शांत,” उसने कहा, उस शब्द से, मुझसे नहीं।

उसने हरा मार्कर निकाला, जो अब हल्का लिखने लगा था, एक उँगली से डायरी को अपनी ओर खींचा और मेरे नीचे लिख दिया:

“शांत” वही लिखता है जिसे पता नहीं कि आगे क्या होने वाला है। —ज.

मैंने उसे तीन बार पढ़ा, वह जगह ढूँढते हुए जहाँ वह ग़लत थी। मुझे वह जगह नहीं मिली, और इस बात ने मुझे उतना परेशान नहीं किया जितना करना चाहिए था।

जो इस डायरी तक बाक़ी डायरियों से गुज़रे बिना पहुँचा हो, उसके लिए: दुकान का नाम नामुमकिन डिलीवरी है और वह मारा की है, जो जादूगरनी हैं, बैंगनी टोपी पहनती हैं और जिनकी एक मुहर है जो ठप्पा लगते ही बुझी मोमबत्ती की गंध वाली चिंगारियाँ छोड़ती है। बाईं तरफ़ की अलमारी में वे वापस आए पार्सल रखती हैं, ऐसे पार्सल जिन्हें कोई पहुँचा नहीं सका, सब R. के भेजे हुए। जिसे पार्सल मिलता है, अगर वह लेबल पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो सुबह होते ही पार्सल उड़कर अपने ख़ाने में लौट आता है। वे बीस थे। जूलिता और मैंने चार पहुँचाए हैं: एक ड्रैगन का अंडा, पैरों वाले कुछ बीज, एक घंटी और पहुँचने का सामान। दीवार पर, हरे अक्षरों में, लिखा है बाक़ी 16।

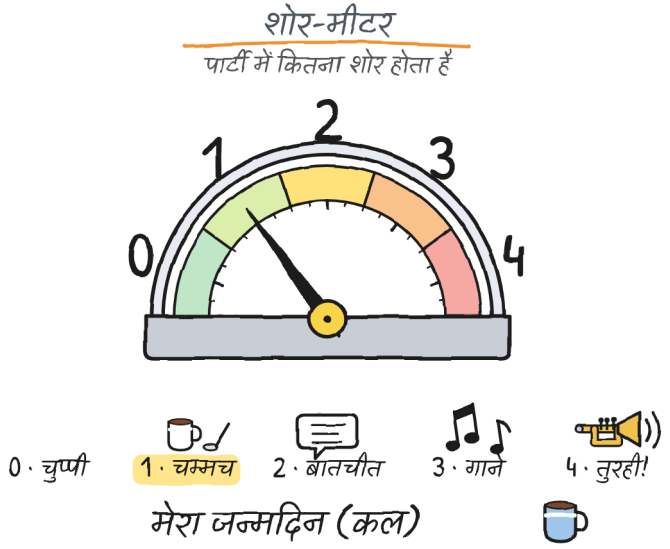
कल, शुक्रवार 16 तारीख़ को, मेरा जन्मदिन था। मैंने उसे घर पर मनाया, माँ के साथ: नींबू वाला केक, दो कप और किसी ने गाना नहीं गाया। बिल्कुल सही रहा।

गाने वाली बात को समझाना पड़ेगा, क्योंकि मेरे घर में यह चूक नहीं, एक समझौता है। माँ ने मुझसे एक दिन पहले पूछा था, हाथ में ब्रेड काटने वाला चाकू लिए: “गाऊँ या नहीं गाऊँ?” मैंने कहा, नहीं। उन्होंने ऐसे सिर हिलाया जैसे कोई दस्तख़त कर रहा हो, और निभाया भी। उन्होंने केक के चार बराबर टुकड़े किए, दो अभी के लिए और दो बाद के

लिए, और काफ़ी देर तक सिर्फ़ यही सुनाई दिया: कप से टकराता चम्मच, फ़्रिज की आवाज़ और बहुत दूर कोई बस। उस शाम की सबसे अच्छी बात यह थी कि बस सुनाई दे रही थी।

जूलिता का तोहफ़ा मैं आगे बताऊँगा। उसकी अपनी जगह बनती है।

जन्मदिन को ठीक से दर्ज करने के लिए उसी रात मैंने एक मशीन बना डाली। मेरे करियर की चौथी: थरथर-मीटर, लाली-मीटर और यहाँ-मीटर के बाद। एक डायल, उसकी सुई, घड़ी जैसी, और पाँच निशान। शून्य, चुप्पी। एक, चम्मच। दो, बातचीत। तीन, गाने। चार, तुरही। मैंने उसका नाम रखा शोर-मीटर, "पार्टी कितना शोर करती है", सुई को 1 पर रखा और नीचे एक छोटा-सा कप बना दिया, जो मेरा था।



जूलिता ने बिना पूछे पन्ना पलटा, डायल देखा, कप देखा और हल्के मार्कर से लिखा:

1 पर जन्मदिन जन्मदिन नहीं होता। वह शाम का नाश्ता होता है। –ज.

उसने मार्कर बंद किया, काउंटर पर कोहनियाँ टिकाईं और ऐसे बोली जैसे कार्यसूची पढ़ रही हो:

“बुधवार 21 मेरा है। और हमने वादा किया था कि इन्हें साथ मनाएँगे।”

“21 के बाद,” मैंने कहा।

“शनिवार 24 को। पाँच बजे।”

“पाँच बजे।”

हम दोनों ने लिख लिया। मैंने पेंसिल से, गुलाबी डायरी में; उसने हरे रंग से, अपनी छोटी नोटबुक में, जिसे उसने पूरी बाँह से ढक लिया, जैसे परीक्षा की कॉपी ढकी जाती है। मैंने अपनी कोहनी से ढक ली। पीछे मारा ने एक काग़ज़ पर मुहर लगाई और चिंगारियाँ उछलीं, उनकी बुझी मोमबत्ती वाली गंध के साथ, और हम में से किसी ने सिर नहीं उठाया, जबकि चिंगारियों को तो सूँघा भी जाता है। हम काउंटर के दो छोरों पर रह गए, एक-दूसरे की तरफ़ आधी पीठ किए, दो लोग एक ही तारीख़ ऐसे लिखते हुए जैसे हर कोई उसका मालिक हो।

किसी ने और कुछ नहीं कहा। अब मुझे अजीब लगता है कि जो दो लोग अभी-अभी सहमत हुए हों, वे जो लिख रहे हैं उसे छिपाएँ। तब मुझे लगा था कि कोहनी अपनी जगह पर हो तो लिखना बेहतर होता है।

मुझे पहले से पता था कि पार्टी कैसी होगी। जूलिता को भी।

मैं यह जानता था।

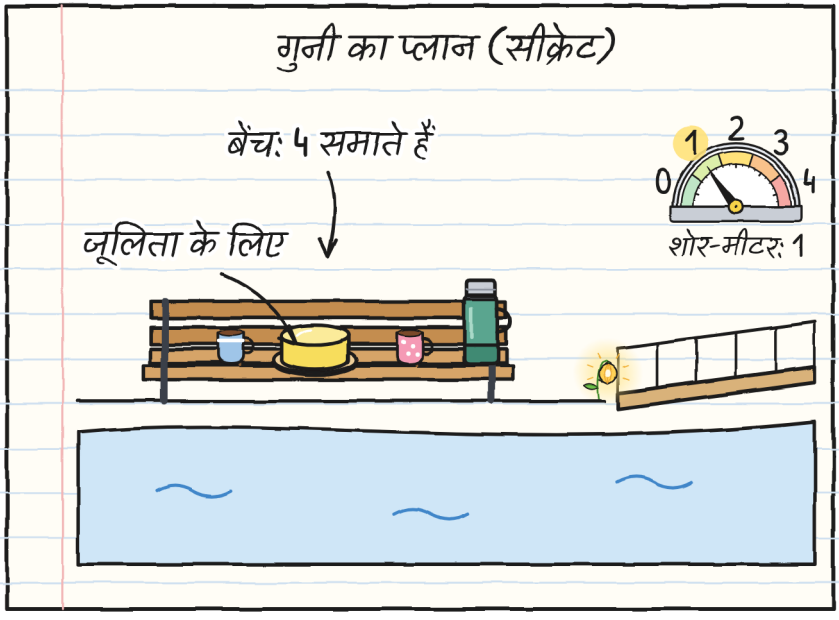
जूलिता को एक शांत शाम की ज़रूरत है। वह हमेशा दौड़ती रहती है, समय नापती रहती है, सवाल पूछती रहती है, और जब आख़िरकार ठहरती है तो उसके पैर में दिख जाता है, जो कहीं और चलता रहता है। नहर के किनारे पैदल पुल वाली बेंच पर शाम का नाश्ता, बिना शोर के, एक थर्मस और छोटे से केक के साथ, उसे अच्छा लगेगा। मैं उस बेंच को जानता हूँ। उसकी एक पट्टी ढीली है जो किनारे पर बैठो तो हिलती है, और वह पूरे

मोहल्ले में अकेली बेंच है जहाँ से कोई दुकान नहीं दिखती। जब मुझे चाहिए होता है कि कुछ न हो, तो मैं वहीं जाता हूँ।

वह सरप्राइज़ होता। उसे कुछ तैयार नहीं करना पड़ता। बस आना होता। मुझे लगा यह सबसे अच्छा तोहफ़ा है: वह जिसमें कोई मेहनत नहीं लगती।

मैं उससे पूछ सकता था। मैंने सोचा भी, काउंटर के पास खड़े, पेंसिल हवा में लिए: "जूलिता, क्या तुम्हें बिना जल्दबाज़ी की शाम अच्छी लगेगी?" लेकिन सवाल का जवाब होता है, और जवाब 'नहीं' भी हो सकता है। नक़्शा जवाब नहीं देता: वह काग़ज़ पर शांत पड़ा इंतज़ार करता है, जो कि मेरी बनाई लगभग हर चीज़ को सबसे अच्छा आता है।

मैंने उसी सुबह उसे बनाया, अगले पन्ने पर: बेंच, पैदल पुल के नीचे की छोटी स्ट्रीट-लाइट, एक केक, दो कप और थर्मस। दुकान आते हुए रास्ते में मैंने बेंच को नापा था। उस पर चार लोग समाते हैं। ऊपर मैंने लिखा गुनी की योजना (सीक्रेट), ताकि इस बारे में कोई शक न रहे कि सीक्रेट किसका है।



जूलिता वाली बात मुझे अगले शुक्रवार तक पता नहीं चली। अगला पन्ना मैंने नहीं लिखा: उसने लिखा, बाद में, मेरी डायरी में, और मैंने उसे वहीं रहने दिया जहाँ उसने रखा था, मेरे वाले के ठीक बग़ल में। उसकी जगह वही है।

यह था जो मैं जानती थी: गुनी को एक असली पार्टी चाहिए, म्यूज़िक वाली, भले उसे पता न हो। अगर पूछूँगी तो वह ना कहेगा। इसलिए नहीं पूछती। –ज.



झंडियाँ उसने एक-एक करके बनाईं, ऐसे धीरज के साथ जो मैंने उसमें कभी नहीं देखा था।

दोपहर में टोन्यो एक डिलीवरी से लौटा। उसने साइकिल दरवाज़े पर खड़ी की, हेलमेट पहने-पहने अंदर आया और अपने डिब्बे पर बैठ गया, जहाँ वह "फ़िलहाल" बैठता है। मेरे

पास सुबह से चार नीले लिफ़ाफ़े थे, पेंसिल से लिखे हुए, मेरी सबसे अच्छी लिखाई में, किनारे पर हाथ टिकाकर ताकि स्याही न फैले, और जूलिता पीछे चिपकने वाले टेपों की दराज़ में कुछ ढूँढ रही थी। मैंने हिसाब लगाया कि मेरे पास दस सेकंड हैं।

“लो।” मैंने उसे चारों लिफ़ाफ़े दिए। “एक तुम्हारे लिए है। बाक़ी मारा, वेरा और फ़्लोरा के लिए। जूलिता के लिए सरप्राइज़ है। उसे मत बताना।”

“सरप्राइज़ तो मैं रख लेता हूँ,” टोन्यो ने कहा।

उसने यह उस आवाज़ में कहा जिसमें वह “मिल गया” कहता है। लिफ़ाफ़े बिना देखे बैग में डाल लिए, और मैंने सोचा: कितनी अच्छी बात है, एक डिलीवरी करने वाला जो पहुँचाई जाने वाली चीज़ पढ़ता नहीं।

आगे जो हुआ, वह मुझे टोन्यो ने शुक्रवार को बताया, समय के साथ, क्योंकि “बिजली” में समय आधी कहानी है। मैं तब तक खाना खाने जा चुका था, जब जूलिता रबर बैंड से बँधे हरे लिफ़ाफ़ों की गड्डी लेकर उसके डिब्बे के पास आई। वे नौ थे। टोन्यो ने उन्हें दो बार गिना।

“एक तुम्हारे लिए है। बाक़ी मारा, वेरा, फ़्लोरा, एलिया, एंटोनियो अंकल, ज़ोई, ब्रूनो और जूते वाली आंटी के लिए। गुनी के लिए सरप्राइज़ है। उसे मत बताना।”

“सरप्राइज़ तो मैं रख लेता हूँ।”

वही वाक्य, वही चेहरा। शायद यही फ़र्क़ है डिलीवरी करने वाले और झूठे में: डिलीवरी करने वाला पूछने वाले के हिसाब से संदेश नहीं बदलता। इस बार, हालाँकि, उसने अपने दोनों लिफ़ाफ़े खोले, नीला और हरा, एक के बाद एक, जैसे रसीद की जाँच होती है। दोनों में एक ही बात लिखी थी: शनिवार 24, पाँच बजे। समय के बाद जगह आती थी, और वहाँ हर एक की अपनी बात थी।

उसने मुझे यह बिना विशेषणों के बताया। उसके दयालु होने का यही तरीक़ा है।

शाम को मैं एलिया की बेकरी में केक का ऑर्डर देने गया। वहाँ ताज़ा सिंकी पपड़ी की और किसी मीठी चीज़ की गंध थी जिसका नाम मैं नहीं ले सका। अंदर घुसते ही, दरवाज़े की घंटी अभी हिल ही रही थी, मैंने पीछे रसोई का दरवाज़ा बंद होने की आवाज़ सुनी: एक सूखी धप, जैसी कूल्हे से मारने पर होती है। मुझे लगा कि मैंने हरी डंगरी का एक टुकड़ा देखा।

मैंने सोचा कि वह कोई दूसरी डंगरी होगी। हरी डंगरियाँ बहुत होती हैं; यह काम का रंग है।

वह मेरी थी। एलिया मुझे रसोई के रास्ते बाहर ले गई। —ज.

“नींबू वाला एक छोटा केक,” मैंने एलिया से कहा। “ऊपर कुछ नहीं। शनिवार 24 के लिए, पाँच बजे, पैदल पुल की बेंच पर। जूलिता के लिए सरप्राइज़ है।”

एक ही दिन में यह दूसरी बार था जब मैं यह वाक्य बोल रहा था, और अब यह मुझे नारे जैसा लगने लगा था।

एलिया ने उसे एक पर्ची पर अपनी गोल लिखाई में लिखा और ऑर्डरों वाले कॉर्क बोर्ड पर पिन से लगा दिया। वहाँ पहले से एक और पर्ची थी, उलटी लगी हुई।

“शनिवार 24 को पाँच बजे? उस वक़्त मेरे पास पहले से एक और केक है। दूसरी जगह के लिए।”

“किसका?”

“यह राज़ है। तुम्हारे वाले जैसा।”

मैं पंजों के बल खड़ा हो गया, जो मैं तब करता हूँ जब मुझे कुछ देखना होता है जो मेरे देखने के लिए नहीं है, और जिससे आज तक कभी कुछ नहीं मिला। मैंने सोचा कि वह किसी और का होगा। अक्टूबर में बहुत लोगों का जन्मदिन होता है। मैंने इसे धीरे से सोचा, यह सुनने के लिए कि कैसा लगता है, और अच्छा लगा: महीने में इकतीस दिन होते हैं और मोहल्ला बड़ा है।

“मैं राज़ रखूँगी,” एलिया ने एप्रन में हाथ पोंछते हुए कहा, “और उस दूसरे का भी। लेकिन मेरे पास एक ओवन है और दो हाथ। शनिवार को पाँच बजे दोनों हाथ एक ही जगह पर होंगे।”

“और दूसरा केक?”

“यह वे लोग तय करें जिन्होंने उन्हें ऑर्डर किया है। मैं केक बनाती हूँ। पार्टियाँ नहीं।”

मैंने लिखा: “एलिया: एक ओवन, दो हाथ, एक जगह।” संख्याएँ मैं बिल्कुल समझ गया। “जिन्होंने” को मैंने जाने दिया, जैसे आप वह बस जाने देते हैं जो आपके मोहल्ले नहीं जाती।

मुझे उन्होंने अगले दिन बताया। मैं भी “जिन्होंने” नहीं समझी थी। –ज.



जब मैं दुकान लौटा, टोन्यो ने बैग काउंटर पर उलट दिया था और लिफ़ाफ़ों को रंग के हिसाब से लगा रहा था: हरे एक तरफ़, नीले दूसरी तरफ़, उस सावधानी से जिससे वह चीज़ें लगाई जाती हैं जो बाँटी जानी हों। ख़त्म करके उसने उन्हें फिर गिना। फिर दोबारा।

“गुनी, क्या तुमने जूलिता से पार्टी के बारे में बात की है?”

“नहीं। यह सरप्राइज़ है।”

“अच्छा,” टोन्यो ने कहा। “‘बिजली’ में दो पतों वाला पार्सल दुकान से बाहर नहीं जाता।”

“कौन-से दो पते?”

“यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता। मुझसे कहा गया है।”

“बिजली” के पास हर चीज़ का नियम है, और जब भी टोन्यो कोई नियम बताता है, मैं उसे मान लेता हूँ, चाहे वह मेरे लिए नया हो। यह नया था। मैंने उसे बिना समझे योजना वाले पन्ने के कोने में लिख लिया, जहाँ वे बातें समाती हैं जो कहीं और फ़िट नहीं होतीं।

टोन्यो ने हर रंग का एक न्योता अपने बैग की जेब में रख लिया।

“ये दोनों मेरे हैं,” उसने कहा। “बाक़ी सोमवार को।”

तभी मारा, जो हर ख़ाने तक बिना स्टूल के पहुँच जाती हैं, सिर्फ़ अपने रौब से, इस बार नीले स्टूल पर चढ़ीं ताकि दोनों हाथों से ऊपर वाले ख़ाने से नंबर 5 का डिब्बा उतार सकें: अलमारी के बाक़ी सबके जैसा, न बड़ा, न छोटा। अंदर कुछ लकड़ी का चरर हुआ। अलमारी में एक साफ़ आयत रह गया, हमेशा की ही नाप का, जो चार ख़ाली जगहों में जुड़ गया; दीवार का पोस्टर फिर भी कहता रहा बाक़ी 16।

“एलिया पाँच बजे आ रही हैं,” मारा ने कहा। “आख़िरकार।”

एक जेब में दो लिफ़ाफ़े। किसी को दूसरे का पता नहीं था। लिफ़ाफ़ों का, मतलब। —ज.

एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

हर कोई अपने साइज़ में। केक वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ की गतिविधियों के साथ)*